ISSN 2278-8808 SJIF 2015: 5.403
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

हनुमानगढ़ एवं गंगानगर जिले के बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

अनुभव बिशु

शोध अध्येता, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर एवं व्याख्याता, श्री गुरु नानक खालसा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज.)

Abstract

प्राचीन काल में अध्यापक बनने के लिये न तो किसी प्रशिक्षण की आवश्यकता थी। और न ही इस प्रशिक्षण हेतु दीक्षा विद्यालय या प्रशिक्षण महाविद्यालय थे। गुरू अपने आश्रम में ही विद्यार्थियों को शिक्षा देते थे। यह वंश परम्परा ही बनती चली गई और न ही इसके लिये प्रशिक्षण की आवश्यकता थी। अब समय बदल गया है। जीवन के मूल्य, आवश्यकताएं, जीवन-दर्शन आदि तेजी से बदल रहे हैं। ऐसे समय में शिक्षा नीति एवं शिक्षा प्रक्रिया में बदलाव आना स्वाभाविक हो गया है। शिक्षा के स्वरूप एवं शिक्षा का व्यावसायिकरण करने हेतु समय-२ पर आयोग व समितियां बनाई गई। समय के बदलते प्रवाह के साथ-साथ शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां, शैक्षिक संरचना आदि में वांछित परिवर्तन नहीं किये गये हैं। बी.एस.टी.सी. शिक्षण प्रशिक्षण की अवधि दो वर्ष की होती है। जिसमें व्यावहारिक प्रशिक्षण मात्र कुछ दिनों का होता है, जो मात्र औपचारिकता होती है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षण प्रशिक्षण के समय व्यावहारिकता का अभाव है। इससे वांछित कौशलों का विकास नहीं हो पाता है। यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के बनाने वालों ने समाज में वांछित परिवर्तन लाने हेतु शिक्षक समुदाय पर ही पूर्ण भरोसा करते हुए नई शिक्षा नीति में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं उसकी गुणवत्ता में मौलिक सुधार की जरुरत महसूस की है। सैद्धान्तिक शिक्षण जितना अच्छा होता है उतना ही व्यावहारिक शिक्षण पर ध्यान दिया जाये, क्योंकि व्यावहारिक ज्ञान ही भावी शिक्षा के शिक्षण कौशल को विकसित करता है। इस शोधकार्य में अनुसंधानकर्त्ता का मुख्य उद्देश्य हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभ्यास के प्रति अभिवृत्ति को जानना है।

मुख्य शब्द *: बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थी, अभ्यास शिक्षण, अभिवृत्ति*

Scholarly Research Journal's **is licensed Based on a work at** www.srjis.com

प्रस्तावना

शिक्षण सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यावहारिक, व्यवसायिक एवं जटिल प्रक्रिया है। अपने बच्चों को आदतन नया शब्द सीखाना शिक्षण है। किसी छात्र को गेन्द फेंकना सिखाना शिक्षण है। जब हम किसी को कुछ सिखाने में सहायता करते हैं, जिसे वह अपने आप नहीं कर सकता उसे और तेजी से प्रभावकारी ढंग से सिखाने में सहायता करते हैं तब हम शिक्षण कर रहे होते हैं। कक्षा में जब एक शिक्षक सुनिश्चित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये पढ़ाता है तब शिक्षण से अभिप्राय है। किन्तु इस प्रकार के अनौपचारिक शिक्षण के अतिरिक्त औपचारिक भी हो सकता है। हम एक शिक्षक के नाते छात्र को भगाना, लड़ाना, कक्षा कार्य न करना, झगड़ना, नकल करके कार्य करना आदि कभी नहीं सिखाते किन्तु जो कुछ नहीं सिखाते उन्हें भी वे सीख लेते हैं। शिक्षा द्वारा व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया शिक्षण है। कोई व्यक्ति जब किसी को कुछ सिखाता है तो वह उसे कुछ अनुचित भी समझ सकते हैं। बच्चे को सत्य के बारे में बता रहे व्यक्ति के समझने के ढंग से वह उचित अथवा अनुचित हो सकता है। सत्य के फलन में विषयों के अनुसरण में, देशहित में

अपने प्राणों की बाजी लगा देना भी शिक्षण की ही देन है। सीखा हुआ व्यवहार वांछित है या अवांछित, यह हमारे दृष्टिकोण और जीवन के मूल्यों पर निर्भर करता है।

प्राचीन काल में अध्यापक बनने के लिये किसी प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं थी। न ही इस प्रशिक्षण हेतु दीक्षा विद्यालय या प्रशिक्षण महाविद्यालय ही थे। गुरू अपने आश्रम में ही विद्यार्थियों को शिक्षा देते थे। यह वंश परम्परा ही बनती चली गई और न ही इसके लिये प्रशिक्षण की आवश्यकता थी। अब समय बदल गया है। जीवन के मूल्य, आवश्यकताएं, जीवन-दर्शन आदि तेजी से बदल रहे हैं। ऐसे समय में शिक्षा नीति एवं शिक्षा प्रक्रिया में बदलाव आना स्वाभाविक हो गया है। शिक्षा के स्वरूप एवं शिक्षा का व्यावसायिकरण करने हेतु समय-२ पर आयोग व समितियां बनाई गई। इन आयोग व समितियों की रिपॉर्ट के अनुसार अध्यापक समाज के कर्णधार हैं। अतः ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो अच्छे कर्णधारों का निर्माण कर सके। इसके लिये आवश्यक है कि भावी अध्यापकों को उचित प्रशिक्षण दिया जाये। उनको सैद्धान्तिक कार्य के साथ व्यावहारिक ज्ञान भी दिया जाना चाहिए। समय के बदलते प्रवाह के साथ-साथ शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां, शैक्षिक संरचना आदि में वांछित परिवर्तन नहीं किये गये हैं। यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के बनाने वालों ने समाज में वांछित परिवर्तन लाने हेतु शिक्षक समुदाय पर ही पूर्ण भरोसा करते हुए नई शिक्षा नीति में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं उसकी गुणवत्ता में मौलिक सुधार की जरुरत महसूस की है। अतः यह कथन उचित है कि, ‘‘अध्यापक केवल एक व्यक्ति न होकर अपने आप में एक संस्था होता है।’’ प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री शैल्डन ई. डेविस ने कहा है कि -‘‘किसी भी विद्यालय का महत्व अध्यापकों पर निर्भर करता है’’ नेल्सन एल. नासिंग के अनुसार- ‘‘शिक्षा की किसी भी योजना में अध्यापक का वही स्थान होता है, जो ब्रह्माण्ड में सूर्य का होता है।’’

जिस अध्यापक के विद्यार्थी उसके अध्यापन कार्य अथवा शिक्षण से संतुष्ट है, उसने मानों सब कुछ पा लिया। इसके लिए सबसे बड़ी आवश्यकता है कि अध्यापक को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान हो, जिस विषय को पढ़ाता है उस पर उसकी पकड़ हो। यह तभी संभव है जब अध्यापक निरन्तर विद्यार्थी बना रहे। अपने ज्ञान में वृद्धि करता रहे, नियमित रूप से अध्ययन मनन करता रहे। अध्यापक अपनी भूमिका तभी अच्छी तरह से निभा सकते हैं जब वे अपनी शिक्षण कार्य में कुशल नियंत्रण रखते हो।

अध्ययन की आवश्यकता व महत्व

किसी भी देश या समाज के वर्तमान को विकसित करने या भविष्य को उज्ज्वल बनाने की आधारशिला शिक्षा होती है। शिक्षा देश के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है, और शिक्षा में अध्यापक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। वर्तमान में शिक्षण प्रशिक्षण के समय व्यावहारिकता का अभाव होने से वांछित कौशलों का विकास नहीं हो पाता है। बी.एस.टी.सी. शिक्षण प्रशिक्षण की अवधि दो वर्ष की होती है। जिसमें व्यावहारिक प्रशिक्षण मात्र कुछ दिनों का होता है, जो मात्र औपचारिकता होती है। अपितु होना यह चाहिये कि सैद्धान्तिक शिक्षण जितना अच्छा होता है उतना ही व्यावहारिक शिक्षण पर ध्यान दिया जाये, क्योंकि व्यावहारिक ज्ञान ही भावी शिक्षा के शिक्षण कौशल को विकसित करता है। इसलिये किसी भी अध्यापक का स्तर कक्षा-कक्ष शिक्षण से ही आंका जाता है। शिक्षण अभ्यास शिक्षण प्रशिक्षण में एक बहुत ही उपेक्षित क्षेत्र है। शिक्षण अभ्यास के प्रति सही वैज्ञानिक दृष्टिकोण आज के युग

की मुख्य आवश्यकता है। अनुसंधानकर्ता ने अपने अनुभव के आधार पर यह निर्णय लिया है कि शिक्षा के क्षेत्र में काफी कार्य हुआ है। परन्तु अभ्यास शिक्षण के क्षेत्र में कार्य कम हुआ है। शिक्षण का इतना महत्व होते हुए भी शोध के क्षेत्र में शिक्षण प्रशिक्षण के महत्वपूर्ण भाग अभ्यास शिक्षण को नजर अन्दाज किया गया है। शिक्षण कार्य कोई व्यापार अथवा धंधा नहीं है बल्कि यह तो एक सेवा है जो सच्चे दिल से की जा सकती है। इस शोध से छात्रों को अपने शिक्षण अभ्यास के प्रति अभिवृत्ति के बारे में जानकारी मिल सकेगी।

वर्तमान में शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में निम्न कमियां दृष्टिगोचर होती हैं- (१.) शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम अभी पुराना ही है जो वर्तमान में आवश्यक दक्षताओं का विकास अध्यापकों में करने में असमर्थ है। (२.) व्यावहारिक शिक्षण केवल औपचारिकता मात्र ही होता है। वास्तविक अध्यापन कौशलों का विकास अध्यापकों में नहीं किया जाता है। (३.) बहुत से ऐसे व्यक्ति भी चुन लिये जाते हैं जिनकी अध्यापन के प्रति न तो अन्तर्मन की भावना होती है और न अभिवृति। (४.) प्रशिक्षण के बाद सेवारत अध्यापक अपने प्रशिक्षण के ज्ञान को व्यवहार में नहीं लाते हैं। (५.) शिक्षण प्रशिक्षण से सम्बन्धित नवाचार जैसे- सूक्ष्म शिक्षण, अन्तक्रिया विश्लेषण, अभिक्रमित शिक्षण, अनुकरणीय शिक्षण, दल शिक्षण आदि का ज्ञान व्यावहारिक रूप में अध्यापकों को नहीं दिया जा रहा है। (६.) अध्यापक शिक्षा में मूलभूत परिवर्तन करके देशव्यापी व्यावहारिक कार्यक्रम बनाना। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षण प्रशिक्षण के समय व्यावहारिकता का अभाव है। इससे वांछित कौशलों का विकास नहीं हो पाता है। अतः इन तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए इस अध्ययन हेतु शोध का विषय चुना गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्त्ता ने निम्नांकित उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए कार्य किया है-

१. हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभ्यास के प्रति अभिवृत्ति को जानना।

२. हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति को जानना।

३. हनुमानगढ़ जिले के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं के अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति को जानना।

४. श्री गंगानगर जिले के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं के अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति को जानना।

५. हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के के पुरूष छात्राध्यापकों की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति को जानना।

६. हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले की महिला छात्राध्यापिकाओं की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति को जानना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

इस शोधकार्य के अन्तर्गत शोधार्थी द्वारा निम्नांकित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया-

१. हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभ्यास के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

२. हनुमानगढ़ व श्री गंगानगर जिले के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

३. हनुमानगढ़ जिले के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं के अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

४. श्री गंगानगर जिले के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं के अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

५. हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के के पुरूष छात्राध्यापकों की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

६. हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले की महिला छात्राध्यापिकाओं की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन की परिसीमाएं

जब भी हम कोई शोध करते हैं तो उसका समय, साधन और शक्ति की दृष्टि से अध्ययन की सीमा निर्धारित करना आवश्यक है, इसके फलस्वरूप ही शोधार्थी ने इस समस्या का सीमांकन किया है। शोध को सुनिश्चित विस्तार देने के लिये एवं अनावश्यक प्रसंगों से इसकी निम्नांकित सीमाएं रखी गई हैं- (१.) यह शोध कार्य राजस्थान प्रान्त के बीकानेर हनुमानगढ़ एवं गंगानगर जिले तक सीमित है। (२.) यह शोध कार्य हनुमानगढ़ एवं गंगानगर जिले के छात्राध्यापकों और छात्राध्यापिकाओं तक सीमित है। (३.) यह शोध कार्य में हनुमानगढ़ एवं गंगानगर जिले के शहरी व ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों को लिया है।

अध्ययन की विधि

इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि को प्रयोग में लिया गया है। सर्वेक्षण विधि का उद्देश्य किसी इकाई को वर्तमान व्यवस्था एवं तथ्यों का अध्ययन करना तथा भावी शोध हेतु सुझाव देना है।

उपकरण

प्रदत्त संकलन के लिये स्वःनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया है। अभिवृत्ति व्यक्ति के उस दृष्टिकोण की ओर संकेत करती है, जिसके कारण वह किसी वस्तु, परिस्थिति, संस्था या व्यक्ति के प्रति कोई विशिष्ट व्यवहार करता है। अभिवृत्ति एक प्रणाली की किसी एक विषयवस्तु व व्यक्ति के प्रति एक विशेष अर्जित अनुभवबद्ध, अनुबन्ध तथा स्थिरीकृत संवेगात्मक प्रवृति होती है। उपकरण का विकास अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विषय विशेषज्ञों के सहयोग से किया गया एवं विशेषज्ञों के निर्देशानुसार निर्मित किया गया।

सांख्यिकीय तकनीक

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है- (१.) मध्य मान, (२.) मानक विचलन, (३.) सहसम्बन्ध, और (४.) टी-मान।

न्यादर्श

न्यादर्श के अन्तर्गत हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के उन प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया है, जो बी.एस.टी.सी. अध्ययन कर रहे हैं। इन संस्थानों से २०० छात्राध्यापक व छात्राध्यापिकाओं को लिया गया हैं, जिनमें हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले से १००-१०० प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया है।

न्यादर्श तालिका

जिला	छात्राध्यापक	छात्राध्यापिका	योग
हनुमानगढ़	५०	५०	१००
श्री गंगानगर	५०	५०	१००
कुल	१००	१००	२००

मुख्य निष्कर्ष

इस तुलनात्मक शोध अध्ययन के निष्कर्ष निम्नांकित प्रकार रहे-

१. हनुमानगढ़ जिले के ६० प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों की अभ्यास शिक्षण के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति पायी गयी हैं तथा श्री गंगानगर जिले के ५६ प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों की अभ्यास शिक्षण के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति पायी गयी हैं।

२. हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभ्यास के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

३. हनुमानगढ़ व श्री गंगानगर जिले के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया है। अतः यह परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

४. हनुमानगढ़ क्षेत्र के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं के मध्य अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

५. श्री गंगानगर जिले के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं के मध्य अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

६. हनुमानगढ़ व श्री गंगानगर के पुरूष छात्राध्यापकों की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

७. हनुमानगढ़ व श्री गंगानगर के महिला छात्राध्यापिकाओं की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

शोध अध्ययन का प्रभाव

इस शोधकार्य में अनुसंधानकर्त्ता का मुख्य उद्देश्य हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभ्यास के प्रति अभिवृत्ति को जानना है। किसी भी देश या समाज के वर्तमान को विकसित करने या भविष्य को उज्ज्वल बनाने की आधारशिला शिक्षा होती है। शिक्षा देश के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है वर्तमान युग में शिक्षा का स्तर दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है, विद्यार्थी अनुशासनहीन होते जा रहे हैं। इन सब कारणों के लिए अध्यापक पूर्ण रूप से विद्यार्थियों को दोषी ठहराते हैं। परन्तु यदि अध्यापक स्वयं का मूल्यांकन करें

तो वास्तविकता का पता चल सकता है कि दोषी कौन है? अतः इस शोध के महत्व को दृष्टि में रखने से इस अध्ययन की उपयोगिता एवं प्रभाविता की जानकारी हो सकेगी। (१.) भावी अध्यापकों में अधिगम आदतें विकसित हो सकेंगी। वह अपने व्यवसाय से पूर्ण संतुष्ट होता है, वह बहुत ही अनुशासित होता है। अच्छी आदतों व अनुशासन पद्धति के कारण ही एक अध्यापक विद्यार्थियों के सम्मान, विश्वास और प्रशंसा का पात्र बन सकेगा। (२.) विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से भी यह शोध अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि विद्यार्थी अध्यापकों की अधिगम आदतों का अनुसरण करता है, उन्हें अपना आदर्श मानता है और इन्हीं के अनुसार वह अपने जीवन मूल्यों का निर्माण करने में सक्षम हो सकेगा। (३.) समाज के दृष्टिकोण से अध्यापक समाज का दर्पण होता है वह आदर्श समाज के निर्माण में पथ-प्रदर्शक होता है। उसके आदर्शों से ही समाज का निर्माण होता है उसके जीवन मूल्य भावी पीढी के लिए प्रेरणादायक होते है इसलिए अध्यापक राष्ट्र निर्माता का दर्जा प्राप्त कर सकेगा।

भावी शोध के लिये सुझाव

प्रस्तुत शोध अनुसंधानकर्ता ने बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों पर किया है। इस अध्ययन में समयाभाव के कारण हनुमानगढ़ व श्री गंगानगर जिले के शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों पर किया गया है। अतः इसके परिणाम पूरे राजस्थान में लागू नहीं हो सकते, किन्तु इस क्षेत्र में अनुसंधान के लिये प्रोत्साहन अवश्य मिलेगा। अतः इस क्षेत्र के भावी अनुसंधान के लिये कुछ निम्नलिखित सुझाव हैं-

१. यह अध्ययन समस्त राजस्थान पर भी किया जा सकता है।

२. इसमें राजस्थान के अन्य जिलों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

३. बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों का अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अलग-अलग अध्ययन (छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं पर) किया जा सकता है।

४. प्रस्तुत अध्ययन में बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों का अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन किया गया है। इसमें इसके साथ-साथ प्रशिक्षणार्थियों की अभिक्षमता व समायोजन का भी अध्ययन किया जा सकता है।

५. प्रस्तुत अध्ययन सीमित बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों पर किया गया है। इस प्रकार न्यादर्श की संख्या को बढ़ाया जा सकता है।

संदर्भ –

ढौडियाल, सच्चिदानंद (१९८२). शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
गुप्ता, एस. पी. एवं ए. गुप्ता. (२०१०). व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन.
गुप्ता एस.पी. एण्ड शर्मा एम.सी. (१९७०). मैन्युअल फॉर टीचर्स इफेक्टिवनेस टैस्ट.
व्यास, जे. एन. व अन्य (१९९६). भावी शिक्षकों के लिये आधारभूत कार्यक्रम, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (२००६). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-२००५, नयी दिल्ली.
हंसराज (२००२). सामाजिक अनुसंधान के सिद्धान्त एवं अभ्यास. नई दिल्लीः सुरजीत पब्लिकेशन.
राय, पारसनाथ, (२००५). अनुसंधान परिचय, आगराः लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पब्लिशर्स.